

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565 -224600, 224900

ई-मेल : jstsdgh01565@gmail.com

विदे-नी विद्वानों में चर्चित हुआ अहिंसा प्रनिक्षण

जी 20 के राश्ट्राध्यक्षों को सुनाएं अहिंसा का सन्देश - टॉमस डार्फन

-तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)-

श्रीडूंगरगढ़ 7 जनवरी : अपने अवधानों , विलक्षण प्रतिभा एवं असाम्प्रदायिक चिंतन से दे-ना के गौरव को और जैन धर्म को वि-व पटल पर स्थापित करने के वाले आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रदत्त अहिंसा प्रनिक्षण एवं सापेक्ष अर्थ-शास्त्र का नया प्रारूप विदे-नी विद्वानों के बीच चर्चित हो रहा है। इसका प्रमाण है, ग्लोबल ग्रीन यूनिवर्सिटी के संस्थापक एवं इंग्लैण्ड के प्रमुख चिंतक डॉ. थॉमस डार्फन, प्रो. ग्लेन डी पेज, रेवरेण्ड लेलेण्ड। आर्क विशय डेलमेर रोबिन्सन, जेद्रिना सांतियागों, डाईने रुसो, विक्टर व्यासा जैसे वि-व प्रसिद्ध चिंतकों द्वारा प्राप्त टिप्पणियां इन विद्वानों ने आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा अहिंसा प्रनिक्षण के सूत्रों पर लिखित ट्रेनिंग इन नॉन वॉयलेंस, थ्योरी एण्ड प्रेक्टिकल को वि-व के लिए अपूर्व बताया है। उक्त जानकारी जैन दर्शन कार्य-शाला में मुनि सुखलाल ने अहिंसा प्रनिक्षण पर विचार व्यक्त करते हुए प्रस्तुत लेखकों की समीक्षाओं की प्रतिलिपियां प्रदर्शित करते हुए दी।

इन समीक्षाओं में यू.एस.ए. के आर्क वि-व डेलमेर में द्विन्सन ने कहा है कि एक ईसाई पादरी के रूप में उस क्षेत्र का वशों तक व्यवहारिक प्रनिक्षण एवं उसके अनुप्रयोग कर अनुभव कर लेने के उपरान्त भी शांति जैसे अत्यन्त दुर्लभ विशय पर मुझे आज तक ऐसे ई-वरीय तत्वयुक्त आलेख पढ़ने को नहीं मिले । उन्होंने लिखा है कि बाईबल सम्बन्धी मेरे अध्ययन से इस प्र-न का समाधान नहीं हो पाया कि शांति क्या है ? शायद यह मात्र एक शब्द है मैं यह जानता हूं कि उसकी अनुभूति किस प्रकार की है। आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा प्रनिक्षण अणुव्रत के जीवन मूल्यों को सम्पूर्ण रूप से प्रसिद्ध किया है। यह अपने उद्देश्य की दृढ़ता, संकल्प शक्ति एवं अनुप्रयोग में विरोचित कार्य है। ऊपर वर्णित मूल्यताओं को भरने के लिए मूल्यवान परामर्श के रूप में आचार्य महाप्रज्ञ को वि-व के बारे में एक ऐसी दृष्टि मिली है जिसको ई-वर स्वयं देखता है तथा उपयोग में लेता है । यह सचमूच आ-चर्यजनक है।

यू.के. स्थित ग्लोबल ग्रीन यूनिवर्सिटी के संस्थापक डॉ. थॉमस डार्फन ने लिखा है कि यह कृति जैनों की प्रचीन शिक्षाओं पर आधारित कई सहस्र-ताब्दियों की आध्यात्मिक साधना से उद्भूत विचारों का एक ऐसा उत्कृष्ट एवं संस्कृत ग्रंथ है जो हमारे आज के वि-व की हिंसा की असीम बुद्धि के आचार्य समाधि ज्ञान का मार्ग दिखाता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने संतुलित विकास के प्रतिष्ठान में चतुश्कोणीय विकास का जो स्वरूप बताया है, उसमें भौतिक सम्पदा, बौद्धिक सम्पदा, नैतिक सम्पदा और आध्यात्मिक सम्पदा को एक स्वस्थ समाज और उससे भी उत्कृष्ट अहिंसक समाज के चार स्तंभों के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस कृति को प्रत्येक शांति के अध्ययन संस्थान, प्रारंभिक संप्रेषण एवं शांति कौशल में निक्षण

प्रशिक्षण कराने वाले प्रत्येक केन्द्र विद्यालयों, कॉलेजों तथा दुनियांभर के शिक्षण केन्द्रों को पहुंचाना आवश्यक बताया है।

डॉ. डॉर्फन ने 20 सम्मेलन के सभी राष्ट्राध्यक्षों तक अहिंसा के संदेश पहुंचाना जरूरी बताया है। मुनि सुखलाल एवं मुनि अक्षयप्रकाश ने तेरापंथ भवन में चल रही जैन दर्शन कार्यशाला में इस जानकारी के साथ आचार्य महाप्रज्ञ के इन प्रारूपों पर विस्तार से प्रकाश डाला एवं देश में अहिंसा प्रशिक्षण के 353 केन्द्र संचालित होने की जानकारी देते हुए अहिंसा प्रशिक्षण के सिद्धांतों का गहराई से अध्ययन करने की प्रेरणा दी।

जीने की कला सबसे महत्वपूर्ण

तेरापंथ भवन के प्रज्ञासमवसरण में प्रवचन करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि व्यक्ति में अगले जन्म को अच्छा बनाने की भावना रहती है। परलोक सुधर जाये इस भावना को मैं अच्छा मानता हूं। उसका कारण है कि इससे आत्मा की निर्मलता सहज रूप से घटित होगी। परलोक सुधरे इसके इसके लिये आवश्यक है वर्तमान लोक भी सुधरे। उन्होंने कहा कि जीना एक कला है। 72 कलाओं में निश्णात व्यक्ति भी अपंडित रह जाता है अगर वह धर्म की कला नहीं जानता। जीने की कला का मतलब अच्छा जीवन जीना, धर्म का जीवन जीना, संसार समुद्र को तेरने की कला जान लेना, जीवन के साथ मृत्यु भी जुड़ी हुई है। साधु और श्रावक दोनों का एक मनोरथ बताया गया कि अंतिम समय में मैं संलेखना पूर्वक संथारे को ग्रहण करूं। विनोबा भावे ने इसी कलात्मक ढंग को स्वीकार किया था।

गीता के आठवें अध्याय में भी मरने की कला बताई गयी है। अंतिम समय निकट लगे उस समय मनुश्य एकाक्षरी मंत्र ओम का जप करें। उसका उच्चारण करें, ओम का पाठ करें व परमात्मा का ध्यान करें। ऐसा करते-करते जो देह को छोड़ता है वह परम गति को प्राप्त करता है। जैन परम्परा में भी ओम को बहुत ही महत्व दिया गया है इसे पंच परमेश्ठी का सार बताया गया है।

जैन दर्शन में कहा गया है कि प्रभु महावीर का जो पाठ करता है या श्रवण भी करता है तो वह वर्तमान को सुधार लेता है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि मूल बात है वीतरागता। अपनी-अपनी परम्परा के अनुसार मंत्र निश्चित किया जा सकत है मुख्यरूप से परिणामों की विमुक्ति रहे। आग्रह और विग्रह से मुक्त होकर वीतरागता पर ध्यान दे। ओम का उच्चारण गले की दृष्टि से, स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा माना गया है।

इतिहास के प्रसंगों की चर्चा करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ के तीसरे आचार्य श्री रायचंद जी के उन प्रसंगों की चर्चा की जब उन्होंने चिंतन पूर्वक अपने उत्तराधिकारी के रूप में मुनि जीतमल को युवाचार्य पद दिया तथा गण की एकता के लिए अनुशासन कायम करने का कार्य किया।

प्रारंभिक प्रवचन में मुनि दिनेशकुमार जी ने कहा व्यक्ति को ज्ञान से, श्रद्धा से, आचरण से वर्द्धमान बनना चाहिए। सहिष्णुता और निर्लोभता का विकास करना चाहिए।

सादर प्रकाशनार्थ : -

तुलसीराम चौरड़िया

मीडिया संयोजक / सहसंयोजक